कहानी

लोमड़ी और कछुए की चतुराई

एक बार की बात है, एक शांत झील के किनारे एक समझदार कछुआ रहता था, जिसका नाम था मेघनाद. वह अपनी दिनचर्या में झील से बाहर निकलकर आसपास टहलना पसंद करता था. एक दिन, जब वह धूप सेंकने के लिए किनारे पर था, झाड़ियों में छिपी एक चालाक लोमड़ी, जिसका नाम था चंचला, ने उसे देख लिया. चंचला को भूख सता रही थी, और उसने सोचा, अरे, ये कछुआ तो मेरे लिए बढ़िया खाना हो सकता है!

चंचला ने झाड़ियों से छलांग लगाई और मेघनाद को पकड़ लिया. मेघनाद डर गया और मन ही मन सोचने लगा, अब क्या होगा? चंचला ने उसे काटने की कोशिश की, लेकिन कछुए का सख्त खोल उसे बचा लिया. मेघनाद ने अपनी बुद्धि जागृत की और धीरे से बोला, अरे लोमड़ी बहन, तुम्हें मुझ तक पहुँचने में दिक्कत हो रही है, है ना? चंचला ने तिरस्कार से कहा, हाँ, ये खोल मेरी राह में आ रहा है!

मेघनाद ने चतुराई से कहा, अगर तुम मुझे झील के पानी में थोड़ी देर डाल दो, तो मेरा खोल नरम हो जाएगा, और तुम्हें मुझे खाना आसान हो जाएगा. चंचला हँसते हुए बोली, क्या सोच रखा है? पानी में डालूँगा, तो भाग न जाओ? मेघनाद ने शांत स्वर में जवाब दिया, नहीं-नहीं, तुम मेरे ऊपर पंजा रख लो, मैं कहाँ जाऊँगा? चंचला ने सोचा-विचारा और मेघनाद की बात मान ली.

चंचला ने मेघनाद को झील के किनारे ले जाया और उसे पानी में डाला, अपने पंजे से दबाए रखा. थोड़ी देर बाद चंचला ने पूछा, अब नरम हुआ कि नहीं? भूख से बर्दाश्त नहीं हो रहा! मेघनाद ने कहा, अभी वह हिस्सा सख्त है, जहाँ तुम्हारा पंजा है. थोड़ा हटा लो, फिर देखना. चंचला ने भरोसा करके पंजा हटाया, और वही पल था जब मेघनाद ने झटके से पानी में गोता लगा लिया और तैरकर दूर चला गया.

चंचला हैरान रह गई और चिल्लाई, अरे, ये तो धोखा हुआ! लेकिन मेघनाद झील के बीच से हँसते हुए बोला, चंचला दीदी, बुद्धि से ही जिंदा रहा हूँ! चंचला को अपनी गलती का एहसास हुआ, और वह खाली हाथ लौट गई. मेघनाद ने राहत की साँस ली और सोचा, अपनी चतुराई से ही खतरा टला.

कुछ दिन बाद, मेघनाद फिर किनारे पर टहल रहा था. चंचला ने उसे दूर से देखा और सोचा, इस बार सावधान रहूँगी. वह धीरे से पास आई और बोली, मेघनाद, तुमने मुझे चकमा दे दिया था, लेकिन अब दोस्ती कर लें? मेघनाद ने हँसते हुए कहा, अच्छा, दोस्ती? पहले भूख लगने पर दोस्ती याद आई? चंचला ने शर्मिंदा होकर कहा, सच कहूँ, मैंने सीख ली है. अब तो बस बातें करूँगी.

दोनों ने एक समझौता किया. चंचला ने वादा किया कि वह मेघनाद को नुकसान नहीं पहुँचाएगी, और बदले में मेघनाद ने उसे झील के पास फल और जामुन खाने का न्योता दिया. एक दिन, जब चंचला आई, मेघनाद ने उसे जामुन खिलाए और कहा, दोस्ती में भरोसा जरूरी है, न कि चालाकी. चंचला ने मुस्कुराते हुए कहा, हाँ, भाई, तूने मुझे सिखा दिया.

इस घटना के बाद, जंगल में यह कहानी मशहूर हो गई. छोटे जानवरों ने एक-दूसरे से कहा, मेघनाद की चतुराई से लोमड़ी भी हारी! एक दिन, जंगल के राजा हिरण ने मेघनाद को बुलाया और उसे सम्मान दिया. हिरण ने कहा, तुमने अपनी बुद्धि से सबको प्रेरणा दी. मेघनाद ने जवाब दिया, धन्यवाद, महाराज, लेकिन मैं तो बस अपनी जान बचाना चाहता था!

सीख

यह मोटिवेशनल स्टोरी बच्चों को सिखाती है कि सही समय पर अपनी बुद्धि का इस्तेमाल खतरे से बचा सकता है. साथ ही, दुश्मनी को दोस्ती में बदलने से जिंदगी आसान और खुशहाल हो सकती है.

बिंदु मिलाओ

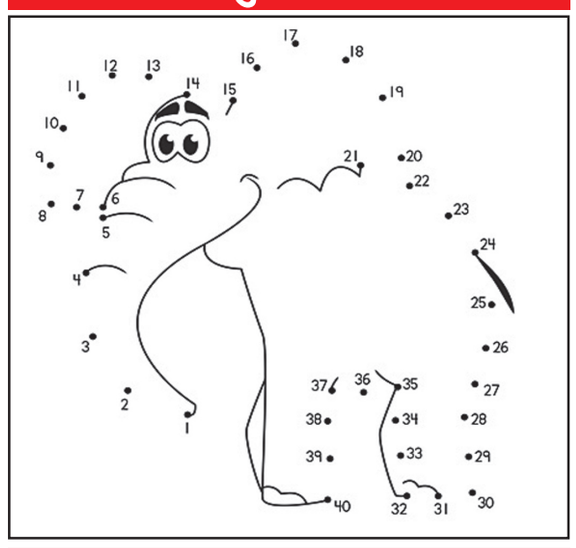

रंग भरो

रंग-बिरंगा पेपर मास्क: बच्चों के लिए मजेदार क्राफ्ट

बच्चों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि उनकी कल्पनाशक्ति को भी बढ़ाती हैं. रंग-बिरंगा पेपर मास्क एक ऐसा मजेदार क्राफ्ट प्रोजेक्ट है, यह आसान, सुरक्षित और रंगों से भरा हुआ है, जिससे बच्चे अपने पसंदीदा जानवर, सुपरहीरो या काल्पनिक चरित्र को मास्क के रूप में बना सकते हैं. इसे बनाना सीखकर वे न केवल मस्ती करेंगे, बल्कि इसे पहनकर खेलने या दोस्तों को दिखाने में भी आनंद लेंगे.

सामग्री

इस क्राफ्ट को बनाने के लिए आपको निम्नलिखित चीजें चाहिए-

- रंगीन कागज (विभिन्न रंगों में, जैसे लाल, नीला, पीला)
- कैंची (बच्चों के लिए सुरक्षित, गोल किनारों वाली)
- गोंद या चिपकने वाला टेप
- रंग (वॉटरकलर या स्केच पेन)

- इलास्टिक धागा (मास्क को बाँधने के लिए)
- पेंसिल और रबड़ (डिज़ाइन बनाने के लिए)

सजावट सामग्री (चमकदार स्टिकर, फीता, या पंख, वैकल्पिक)

विधि (चरण-दर-चरण)

डिज़ाइन बनाएँ- एक रंगीन कागज पर पेंसिल से मास्क का आकार बनाएँ. यह गोल, अंडाकार या जानवर के चेहरे जैसा हो सकता है (जैसे शेर, बिल्ली या सुपरहीरो मास्क).

काटें- सुरक्षित कैंची से कागज को ध्यान से काट लें. आँखों के लिए दो छोटे-छोटे छेद बनाएँ, ताकि बच्चा देख सके.

रंगाई करें- मास्क को अपने पसंद के रंगों से सजाएँ. स्केच पेन या वॉटरकलर से चेहरे, नाक, या डिज़ाइन बनाएँ.

सजाएँ- चमकदार स्टिकर, फीता या पंख चिपकाकर मास्क को और आकर्षक बनाएँ.

इलास्टिक लगाएँ- मास्क के दोनों सिरों पर छोटे-छोटे छेद करें और इलास्टिक धागा डालकर उसे बाँध दें, ताकि मास्क सिर पर टिका रहे.

टेस्ट करें- मास्क को पहनकर देखें कि यह आरामदायक है या नहीं. अगर जरूरत हो, तो इलास्टिक को ठीक करें.

क्या कर सकते हैं?

खेलें- बच्चे इसे पहनकर दोस्तों के साथ नाटक या छुपन-छुपाई खेल सकते हैं.

शोकेस करें- इसे घर पर या स्कूल में दिखाकर अपनी मेहनत का गर्व महसूस करें.

गिफ्ट करें- मम्मी-पापा या दोस्तों को तोहफे के रूप में दें.

सजावट- इसे दीवार पर लटकाकर कमरे को रंगीन बनाएँ.

जानकारी

दुनिया से जुड़े रोचक तथ्य

- चीन की दीवार (द ग्रेट वॉल ऑफ चाइना) अंतरिक्ष से दिखाई देती है.
- अमेजन वर्षावन 20 प्रतिशत ऑक्सीजन का उत्पादन करता है.
- अमेजन में 2,00,000 से अधिक पौधों की प्रजातियां हैं.
- अंटार्कटिका सबसे शुष्क, ठंडा और हवादार महाद्वीप है.
- गर्मियों में एफिल टॉवर 15 सेंटीमीटर ऊंचा हो सकता है.
- केले जामुन हैं, लेकिन स्ट्रॉबेरी जामुन नहीं हैं.
- मानव नाक एक ट्रिलियन से अधिक गंधों को पहचान सकती है.
- इतिहास का सबसे छोटा युद्ध ब्रिटेन और जांजीबार के बीच हुआ था जो 38 से 45 मिनट चला.
- ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मांड में जितने तारे हैं, उतने पृथ्वी के समुद्र तटों पर रेत के कण नहीं हैं.
- माउंट एवरेस्ट हर साल लगभग 4 मिलीमीटर बढ़ रहा है.
- प्रशांत महासागर का क्षेत्रफल 63 मिलियन वर्ग मील से अधिक है.
- आज जितने लोग जीवित हैं, उतने कभी नहीं थे.
- जापान में एक 'क्राईंग सूमो' प्रतियोगिता होती है, जिसमें पहलवान बच्चों को रुलाते हैं.
- मारियाना ट्रेंच दुनिया की सबसे गहरी समुद्री खाई है, जो माउंट एवरेस्ट से भी गहरी है.
- शहद कभी खराब नहीं होता और पुरातत्वविदों को 3,000 साल पुरानी कब्रों में शहद मिला है.
- दो जुड़वां बच्चों के जन्म के बीच सबसे लंबा समय 87 दिन हो सकता है.
- मकड़ी का रेशम स्टील से भी मजबूत होता है.
- शुक्र ग्रह पर एक दिन, एक साल से भी लंबा होता है.
- समुद्र में मछलियों की 23,000 प्रजातियां हैं.

भूल भुलैया

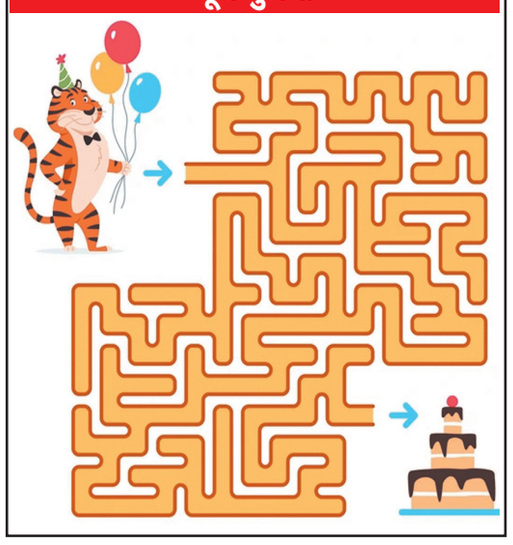

प्रेरक प्रसंग

शुभांशु शुक्ला की रोमांचक यात्रा

'मैं तिरंगा और आप सभी की दुआएं साथ लेकर आया हूँ'- अंतरिक्ष की ओर रवाना होते हुए शुभांशु शुक्ला ने यह शब्द हर भारतीय के दिल में गूंजाए. शुभांशु शुक्ला एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री हैं, जिन्हें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा गगनयान मिशन के लिए चुना गया है. वह भारतीय वायु सेना के एक अनुभवी पायलट हैं और अपनी उड़ान प्रशिक्षण और अनुभव के दम पर अंतरिक्ष यात्री बनने की योग्यता हासिल की है.

शुभांशु शुक्ला का जन्म उत्तर प्रदेश के लखनऊ में हुआ था. उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा लखनऊ से पूरी की और बाद में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में दाखिला लिया. NDA से स्नातक करने के बाद, उन्होंने 2006 में भारतीय वायु सेना में कमीशन प्राप्त किया और फाइटर पायलट के रूप में सेवा शुरू की. विभिन्न लड़ाकू विमानों जैसे Su-30MKI, MiG-21, MiG-29, जगुआर और हॉक को उड़ाने का उनका अनुभव उन्हें खास बनाता है. शुभांशु शुक्ला को ISRO द्वारा गगनयान मिशन के लिए चुने गए चार अंतरिक्ष यात्रियों में शामिल किया गया. उन्हें रूस के गगारिन कॉस्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया, जहां उन्होंने अंतरिक्ष यात्रा के लिए जरूरी कौशल और ज्ञान प्राप्त किया. इस मिशन के लिए ISRO मॉड्यूल, लॉन्च व्हीकल और जीवन समर्थन प्रणाली जैसी अहम तकनीकों पर काम कर रहा है. शुभांशु की भूमिका में अंतरिक्ष यान का संचालन, प्रयोगों का प्रबंधन और आपात स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया देना शामिल होगा. शुभांशु शुक्ला ने हाल ही में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ. 25 जून, 2025 को फाल्कन 9 रॉकेट से लॉन्च होने के बाद, उन्होंने 26 जून को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचकर इतिहास रचा.

कविता

बादल प्यारे

बादल प्यारे आसमान के
क्या तुम भी सुस्ताते हो?

पंख नहीं हैं लेकिन फिर भी
कैसे तुम उड़ जाते हो?

कोई परिंदा आकर तुमसे
करता भी है बात?

या फिर यूँ अकेले ही
कट जाती है रात?

काले बादल कहो जरा
है भीतर कितना पानी?

तुम भी नटखट मेरे जैसे
करते हो शैतानी।

सच तुम्हें भी पड़ता
अपनी अम्मा से बोलो?

हम तो हैं अब दोस्त बने
मुझसे तो राज ये खोलो॥

बूझो तो जानें

- क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?

जवाब-उम्र

- वह क्या है, जो खरीदो तो काला, इस्तेमाल करो तो लाल और फेंको तो सफेद होता है?

जवाब- कोयला

- प्रथम कटे तो दर हो जाऊँ, अंत कटे तो बंद हो जाऊँ, केला मिले तो खाता जाऊँ, बताओ मैं हूँ कौन?

जवाब-बंदर

- एक थाल मोतियों भरा, सबके सिर पर उल्टा धरा, चारों ओर फिरे वो थाल, मोती उससे एक न गिरे.

जवाब- आकाश और तारे

- गोल है पर गेंद नहीं, पूँछ है पर पशु नहीं, पूँछ पकड़कर खेलें बच्चे, फिर भी मेरे आँसू न निकले.

जवाब- गुब्बारा

हंसी-ठिठोली

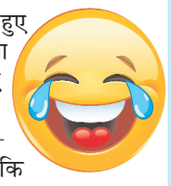

- अध्यापक ने पढ़ाते हुए प्रश्न पूछा - कौन-सा हाथ लिखने के लिए सबसे अच्छा होता है?
  एक छात्र ने उत्तर दिया - कोई सा भी नहीं, क्योंकि हम पेन से लिखते हैं.
- अध्यापक - बच्चों बताओ, गणित की किताब देखकर अक्सर सब लोग मायूस क्यों हो जाते हैं?
  छात्र - क्योंकि, इसमें किसी भी सवाल का हल नहीं होता है.
- मास्टर जी- खुशी का ठिकाना न रहा कोई इस मुहावरे का अर्थ बताओ?
  चिंटू - खुशी घर वालों से छिपकर, हर रोज अपने दोस्त से मिलने जाती थी.
  फिर एक दिन उसके पापा ने उसे देख लिया और खुशी को घर से निकाल दिया.
  अब बेचारी खुशी का ठिकाना न रहा.
  यह जवाब सुनकर मास्टर जी अभी तक बेहोश ही हैं.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

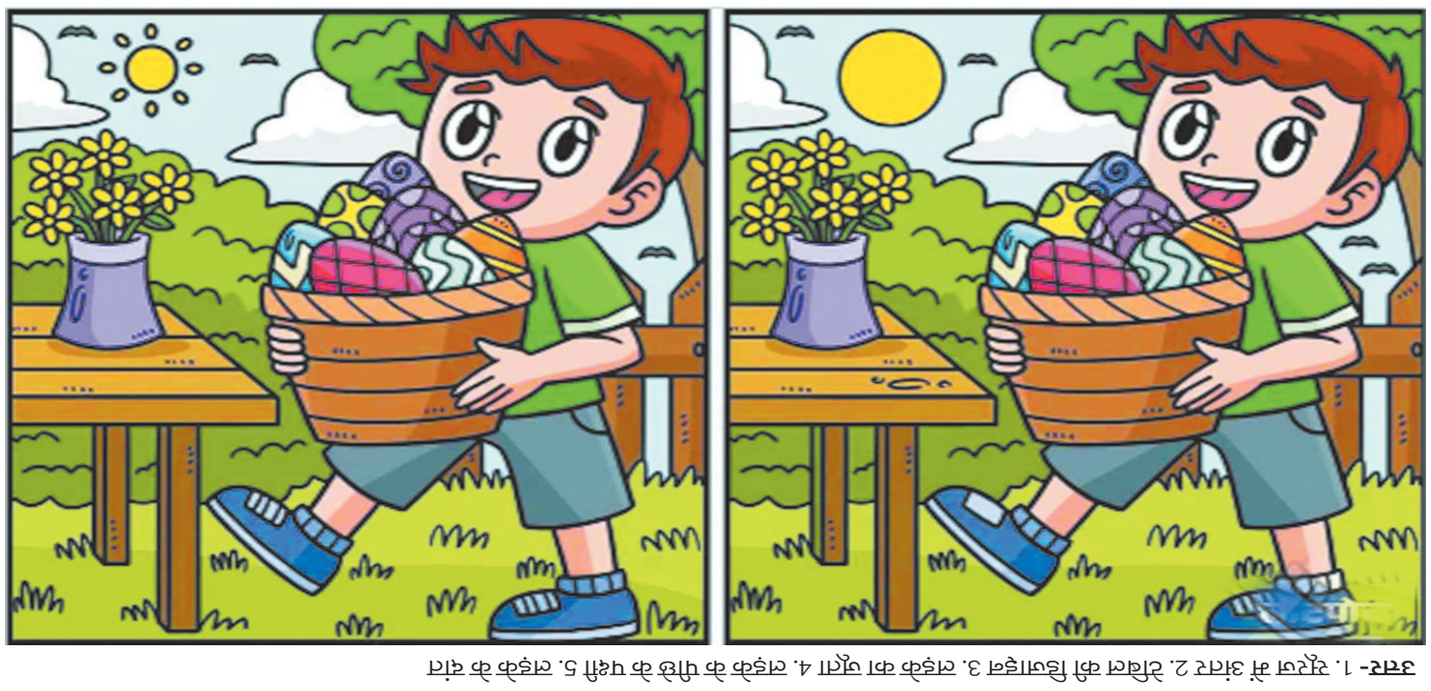

उत्तर- 1. सूरज की अंतर 2. टोकरी की डिजाइन 3. लड़के का जूता 4. लड़के के पीछे के पत्ती 5. लड़के के बाल